भूमिका

भारत में प्रारम्भिक नाटक संस्कृत भाषा में लिखे गये। हिंदी साहित्य में नाटक लिखने का सिलसिला बहुत बाद में और वह भी नवजागरण कालीन नई चेतना की कटिबद्धता के साथ प्रारम्भ होता है। अतः कह सकते है कि नाटक नई चेतना का वाहक है और दलित मुक्ति का सवाल आधुनिक काल की नई चेतना के सवालों में शामिल है। **'कोर्टमार्शल में दलित प्रश्न'** नामक लघु शोध-प्रबंध समाज में फैली जाति व्यवस्था को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इसमें दलितों के प्रति समाज में हो रहे अपमान और घृणा का अमानवीय चेहरा सामने आता है।

स्वदेश दीपक ने समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था की ग्रंथि को बखूबी दिखाया है। इसकी पृष्ठभूमि में सेना और उसकी कार्यशैली है। इसमें पात्रों की मानसिकता की परतें जैसे-जैसे **'कोर्टमार्शल'** के दौरान खुलती हैं, वैसे-वैसे पात्रों की सामाजिकता भी स्पष्ट होने लगती है। यह नाटक मूलतः रामचन्दर द्वारा अपने अफसर को गोली मार देने के बाद गठित **'कोर्टमार्शल'** के सहारे कथानक को खोलता है। नाटक में अफसर और जवान के रूप में दो वर्ग हैं, अफसर शोषक और जवान शोषित है, पर रामचन्दर यहाँ इन दोनों के साथ तीसरी पहचान भी रखता है और वह पहचान है उसकी जाति।

इस विषय पर काम करने के पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि आजादी के बाद भी लोगों के मन में जात-पात का भेदभाव बना हुआ है। आज भी समाज में ऐसी अनेकों घटनाएँ देखने को मिलती हैं। कोर्टमार्शल के अध्ययन की प्रक्रिया में एक सवाल लगातार मेरे मन में हलचल मचाता रहा कि जो समाज दलित वर्ग को गंदा कहकर उसके साथ अछूत का व्यवहार करता है और तरह-तरह से उसे अपमानित करता है, वह बेहतर कैसे हो सकता हैं ?

इस लघु शोध-प्रबन्ध को मैंने कुल तीन अध्यायों में विभाजित किया है। पहला अध्याय **'दलित प्रश्न के विविध आयाम'** के नाम से है। इसको पुनः तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। **दलित से आशय**, **दलितों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** तथा **समकालीन दलित जीवन**। इस अध्याय में दलित शब्द के अर्थ को स्पष्ट करते हुए विभिन्न दलित चिंतकों की परिभाषाओं के द्वारा समझाया गया हैं और साथ ही दलितों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की

गई है। समकालीन दलित जीवन में – सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थिति का उल्लेख विषय को समझने की जरूरत को ध्यान में रखकर किया गया है।

दूसरा अध्याय **'कोर्टमार्शल में अभिव्यक्त दलित चेतना'** है। इसको पुनः तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है - **अस्मिता का प्रश्न**, **जातीय चेतना की अभिव्यक्ति** तथा **वर्गीय चेतना की अभिव्यक्ति**। इस अध्याय में **'अस्मिता'** का अर्थ बताते हुए नाटक में अभिव्यक्त दलित अस्मिता की चर्चा की गई है, नाटक में अभिव्यक्त जातीय चेतना की बात की गई है तथा नाटक में आई वर्गीय चेतना का उल्लेख किया गया है।

तीसरा अध्याय **'कोर्टमार्शल का शिल्पगत विश्लेषण'** है। इसको पुनः तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। **भाषिक संरचना**, **संवाद** तथा **रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य** और नाटक की भाषा पर चर्चा की गई है।

लघु- शोध प्रबन्ध के लेखन में मैंने जिन विद्वानों की सामग्री का प्रयोग किया सबसे पहले उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

शोध निर्देशक डॉ॰ रूपेश कुमार सिंह का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे न सिर्फ शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया बल्कि कई प्रकार की सामग्री उपलब्ध करायी और मुझे लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करने का अवसर प्रदान किया। साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो॰ सूरज पालीवाल एवं साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह का भी आभारी हूँ जिन्होंने विषय चयन में मुझे सहायता प्रदान की। साथ ही साहित्य विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरे इस लघु शोध में सहयोग प्रदान किया।

इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में मम्मी श्रीमती रमेश देवी, पापा श्री ईश्वर दयाल, मामा-मामी और ललिता (रेशमा) के द्वारा जो स्नेह और मानसिक सहायता प्राप्त हुई उसने मेरे लिए ऊर्जा का कार्य किया। अपने मित्रवत गुरु डॉ॰ सुनील कुमार मांडीवाल (दिल्ली विश्वविद्यालय) का विशेष आभार जिन्होंने हर कदम पर मेरा साथ दिया है।

जीवन में अच्छे दोस्तों का साथ ही सफलता का प्रथम सोपान होता है मुझे भी बी॰ ए॰, एम॰ ए॰ और एम॰ फिल॰ में कुछ ऐसे ही दोस्तों का साथ मिला जिनका सहयोग इस शोध कार्य के दौरान भी बना रहा। उनके प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ।